भगवत् कृपा

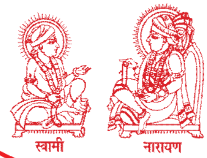

साकार प्रगट ब्रह्म को जो पहचाने, वो परम को पाये

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली द्विमासिक सत्संग पत्रिका

वर्ष 27 अंक : 2 | 15.3.2004 सोमवार (मार्च-अप्रैल) | वार्षिक चंदा : 50.00

निमंत्रण

जय स्वामिनारायण !

१९५२ में ब्रह्मस्वरूप काकाजी को जो साक्षात्कार हुआ, उसे ५२ वर्ष हुए...

यह ५३वाँ वर्ष चल रहा है। ५३ का अंक सांकेतिक है।

प.पू. काकाजी अक्सर कहते –

जब कोई भी हल नहीं मिलता हो, 'जोकर' यानि ५३वाँ पत्ता डालो !

अर्थात्– ब्रह्मस्वरूप संत की मूर्ति में लय और लीन होकर

'स्वामिनारायण' महामंत्र का जाप आजमाओ !

साक्षात्कार करा कर ब्रह्मस्वरूप योगीजी महाराज ने हमें –

बृहद् गुणातीत समाज को प.पू. काकाजी के रूप में ऐसी चमत्कारी मूर्ति की सांकेतिक भेंट दी है।

तो आइए, इन्हें अमर रखने

28 मार्च 2004, रविवार की सायं 6:00 से 9:00

इनके ज्योतिर्धरों में से एक एवं हम सभी के प्राणाधार

परम पूज्य गुरुजी की 67 वीं जन्म जयंती पर

गुरुहरि प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी, प.पू.साहेबजी एवं पू. निर्मलस्वामिजी जैसी विभूतियों की निश्रा में

सपरिवार ईष्ट मित्रमंडल सहित एकत्रित हों

और

सेवा, भजन-कीर्तन एवं संत समागम से स्वयं को कृतार्थ करें !

- गुणातीत कुनबा, दिल्ली

: स्थान :

श्री अक्षरपुरुषोत्तम स्वामिनारायण मंदिर

'ताड़देव', काकाजी लेन, स्वामिनारायण मार्ग, अशोकविहार - 3, दिल्ली - 110 052

काकाजी का अदना सैनिक बन कर जो पल-पल जिए....

❋ प.पू. काकाजी के आध्यात्मिक वारिसदारों में से 'कोहिनूर हीरा' यानि– प.पू. गुरुजी
❋ प.पू. काकाजी के स्थावर व जंगम मंदिर का मूर्तिमान स्वरूप यानि– प.पू. गुरुजी !
❋ दिल और दिमाग दोनों का अद्भुत समन्वय यानि– प.पू. गुरुजी !
❋ प.पू. काकाजी रुपी 'पारस से पारस बनी' विभूति यानि– प.पू. गुरुजी !
❋ प.पू. काकाजी की मूर्ति व उनका वचन—बस यही जिसका जीवन यानि– प.पू. गुरुजी !
❋ उत्तर भारत के भक्तों का असली धन - पूँजी यानि– प.पू. गुरुजी !
❋ नाजुक देह और कोमल दिल का स्वरूप यानि– प.पू. गुरुजी !
❋ अनंत चैतन्यों के 'आराध्य देव' यानि– प.पू. गुरुजी !
❋ भजन से हर बाजी जीते वो—प.पू. गुरुजी !

ऐसे **प.पू. गुरुजी की जन्म जयंती** अर्थात् प्रार्थना करके आध्यात्मिकता में एक कक्षा और आगे बढ़ने का सुनहरा अवसर....

प.पू. गुरुजी पूर्व के—महाराज के समय के सिद्ध संत होंगे, तभी तो चैतन्यदर्शी प.पू. बापा ने उन्हें आग्रहपूर्वक साधु की दीक्षा के लिए कहा और प.पू. काकाजी ने उत्तर भारत के मुक्तों के उद्धार के लिए इन्हें पसंद किया। प.पू. काकाजी ने प.पू. गुरुजी को जो दिल्ली में रखने का संकल्प किया, उस संकल्प की मौज हम सभी को मिल रही है ! प.पू. काकाजी के संकल्प, अनथक् परिश्रम एवं प.पू. गुरुजी के बेजोड़ समर्पण से उत्तर भारत में शून्य में से सत्संग का सर्जन हुआ... वीरान सूखे प्रदेश में मानो आध्यात्मिक हरियाली छा गई।

प.पू. गुरुजी निःस्वार्थ प्रेम का मूर्तिमान स्वरूप हैं... स्वामी की बातों में लिखा है–'करोड़ों माँ के प्रेम को फीका करे ऐसा गुणातीत साधु का प्रेम है।' सुबह से रात तक की प.पू. गुरुजी की अविरत कार्यप्रणाली, भक्तों का आना-जाना, उनकी समस्याएं सुनना, फोन्स एटेन्ड करना इत्यादि देख कर लगता है कि उन्होंने अपनी पल-पल कृष्णार्पण-काका अर्पण कर दी है। जीव के वे सच्चे हमदर्द हैं... किसी का भी हॉस्पिटल में दाखिल होने का या ऑप्रेशन इत्यादि कराने का मेसेज आएगा तो सबसे पहले प.पू. गुरुजी पूछते हैं कि पैसे की सुविधा है ? वर्ना लेकर आऊँ... केवल पूछने मात्र नहीं, बल्कि आधी रात को वे कई भक्तों के यहां सहाय रूप होने पहुँचे हैं।

यदि किसी ने एक बार भी प.पू. काकाजी को देखा है या ऑडियो टेप द्वारा भी सुना है, प.पू. गुरुजी को देखते ही-मिलते ही या उनकी बातें सुनते ही उसे प्रतीत होता है कि **प.पू. गुरुजी द्वारा प.पू. काकाजी सांगोपांग अपना कार्य कर रहे हैं...** इससे स्पष्ट है कि **प.पू. गुरुजी का रोम-रोम काकामय है।**

प.पू. काकाजी से जुड़े भक्तों की पराभक्ति करने में वे सच्चा आनंद मानते हैं... हम इस बात को जो भी रूप दें, पर प.पू. गुरुजी अपना जीवन प.पू. काकाजी के ही सिद्धांतों पर जी रहे हैं... भक्तों ही मानो प.पू. गुरुजी का आराम है— उनका स्वस्थ स्वास्थ्य है। संबंध वालों की महिमा वे अपने वर्तन से समझाते हैं।

हम सभी जानते हैं कि रद्दी दान को एकत्रित करके उससे प्राप्त मुद्रा द्वारा दिल्ली में 'अक्षरज्योति महिला केन्द्र' के आश्रम का निर्माणकार्य हो रहा है। रद्दी एकत्रित करने के लिए मंदिर के समर्पित हरिभक्त अनुमति प्राप्त किसी भी एपार्टमेन्ट में हर शनिवार और रविवार की सुबह जाते हैं।

हर बार की तरह 12 मई 2001- शनिवार को हरिभक्त रद्दी दान एकत्रित करने 'राजस्थली एपार्टमेन्ट' में गए थे। दोपहर की भरी गर्मी का 44 डिग्री टेम्प्रेचर था। प.पू. गुरुजी ने बिना किसी को बताए पू. सुहृद्स्वामी से पन्ना बनवाया और बड़ी स्टील की पवाली भरवा कर खुद इस तपती धूप में 12:00 बजे हरिभक्तों को पिलाने के लिए 'राजस्थली एपार्टमेन्ट' पहुँच गए ! भक्तों की महिमा व उनके दिल की मूर्ति कैसे लूटनी वह उन्होंने वर्तन से दिखाया...

ऐसे ही अबकी 17 अगस्त, रविवार को 'सत्यवती कालोनी' के मंदिर से जन्माष्टमी निमित्त शोभायात्रा निकलने वाली थी। **प.भ. कपूर साहेब** ने प.पू. गुरुजी को अनुरोध करा कि यहां अपने मंदिर के आगे रोक कर उन्हें जलपान

कराया जाए। प.पू. गुरुजी ने 50-60 भाईयों-भाभियों को वॉलेन्टियर ड्रेस में बुला कर खास बुंदी के प्रसाद के पैकेट वगैरह का सारा सेट अप करवा दिया। इससे भी अधिक, खूब गर्मी होते हुए भी प.पू. गुरुजी खुद करीब दो-ढाई घंटे गेट पर बैठे रहे... प.पू. गुरुजी ने बाद में कहा कि–

हमें 'वाह-वाह' लूटने की कोई चाहना नहीं, पर सिर्फ कपूर साहेब के कारण यह किया गया।

इस प्रसंग से पता चलता है कि **इनका हर उद्यम सिर्फ भक्तों के लिए ही होता है...**

स्वरूपों के प्रति भी उनकी भक्ति बेमिसाल है। **प.पू. पप्पाजी** हरिद्वार जाने वाले थे। तो, विद्यानगर से दिल्ली मंदिर में मेसेज आया कि पप्पाजी दिल्ली तक ट्रेन से आएंगे और वहां से बाइ रोड हरिद्वार जाएंगे। प.पू. गुरुजी ने उनको कहलवाया कि– 'रोड से पप्पाजी को थकान लगेगी। इससे अच्छा है कि यहां से हरिद्वार 'शताब्दी' जाती है, वो ज्यादा आरामदायक रहेगी। फिर भी मैं उसके बारे पता करता हूँ।' प.पू. गुरुजी खुद रात को स्टेशन गए और वहां वे शताब्दी की सीट पर बैठ कर-लेट कर सब चेक करके आए। हमें भी कोई काम सौंपा हो तो हम कर देते हैं, लेकिन 'भक्ति' कोई बात ही अलग है !

अभी-अभी का एक ऐसा प्रसंग– 7 नवंबर 2003 को **प.पू. स्वामिजी** आने वाले थे। ठाकुरजी के हॉल में सभा होने के कारण वहां प.पू. स्वामिजी के लिए सोफा रखा था। प.पू. गुरुजी काफी देर तक उस सोफे को देखते रहे और फिर अपने सोफे से उठ कर वहां गए। वहां बैठ कर देखा-करा। फिर हाथ ऊपर करके बैठ कर देखा कि स्वामिजी को कम्फर्टेबल रहेगा या नहीं। और... सेवक से एक पतला तकिया मंगवा कर सोफे के बॅक रेस्टर पर रखा ताकि स्वामिजी जब सिर पीछे करें तो सोफ्ट लगे। **प.पू. स्वामिजी सच में कहते हैं कि–**

बुद्धि और भक्तिभरा दिल– दोनों का समन्वय बहुत कम मिलता है, जो गुरुजी में है।

प.पू. गुरुजी खूब समर्थ हैं और उनके आशीर्वाद से कई भक्तों के मनोरथ पूरे होते हैं। पर, जब भी प.पू. गुरुजी को इस बारे कहने कोई आए तो वे तुरंत बोल उठते हैं कि 'चलो अच्छा हो गया काकाजी ने कर दिया।' एक पल भी वे अपने गुरु के प्रति के **स्वामीसेवकभाव** से अलग नहीं होते। जब भी कोई प्रॉब्लम लेकर उनके पास आए, तो उनके मुख से एक ही वाक्य सुनाई पड़ेगा कि– 'प.पू. काकाजी को याद करके भजन करना... हम भी भजन करेंगे !' **एक सिद्ध पुरुष की भाँति उन्होंने कभी नहीं कहा कि– जाओ तुम्हारा काम हो जाएगा। यही फर्क है सिद्ध पुरुष और अखंड प्रभुधारक संत में !**

आज अनेक मुमुक्षुओं को अपनेपन से डांट कर या प्यार से या कई प्रकार के लाड़ लड़ा कर आध्यात्मिक मार्ग पर पथप्रदर्शन देकर जगत में रहते हुए भगवान के दिव्य सुख की ओर अग्रसर करने वे निरंतर प्रयत्नशील हैं। उनके मन-बुद्धि को पवित्र बना रहे हैं... **अनथक् परिश्रम से अनेक चैतन्यों को प्रभुसम्मुख कर रहे हैं।**

अमदावाद के प.भ. शैलेषभाई आचार्य के छोटे भाई **प.भ. परिमलभाई** प.पू. गुरुजी के संबंध में आए... इस संबंध में आने के बाद उनको भजन में बैठे देख कर–उनके जीवन में इतना अधिक परिवर्तन देख कर उनके रिश्तेदार-मित्र आश्चर्य से पूछने लगे कि यह पहले वाला परिमल तो लगता ही नहीं ! इसी संदर्भ में जवाब देते हुए प.भ. परिमलभाई किसी को फोन पर कह रहे थे कि–

हमारे गुरुजी ऊपर से कुछ कहते नहीं, पर वे ऐसे हैं कि आंतरिक वैराग्य करा देते हैं।

और... एक बार वे मंदिर आए थे तब उन्होंने प.पू. गुरुजी से मंदिर में सेवा देते हुए कहा कि–

गुरुजी ! मुनाफे का दसवां भाग जो हम आपको देते हैं, वो तो मानो महाराज का कहा इन्कम टेक्स ही निकालते हैं। वो 'सेवा' तो नहीं कही जाए। पर, उस दसवें भाग के अलावा जो हम दें, वो 'सेवा' कही जाए ना !

प.पू. गुरुजी के जीवन **का एकमात्र उद्यम यही दिखाई पड़ता है कि उनके संबंध से जीने वाले हर परिवार में भगवान व संत का स्थान केन्द्र में हो,** अडिग निष्ठा और स्वरूपलक्षी सुहृद्‌भाव हो, जिससे कि परिवार में हर प्रकार से सुख, शांति, आनंद निरंतर बना रहे। **भगवान के संबंध से सर्वथा समृद्ध ऐसे आत्मीय परिवार ही तो संत के परिचायक बनते हैं !**

भगवान रखे ऐसे साधु की एक ही निःस्वार्थ भावना होती है कि सब का भला हो... सब सुखी हों, आपस में प्रेमभावना बढ़े... अंतर से काम, क्रोध, आलस-प्रमाद, वासना, ईर्ष्या, कपट जैसे दुर्गुण टल जाएं और भक्तों का दिल एक स्वच्छ स्थान बने जहां प्रभु विराजमान हो पाएं।

तन, मन, धन और आत्मा के परितापों से गुजरते इस युग में संजीवनी औषधि का काम केवल भगवान अखंड रखे सच्चे संत द्वारा ही संभव है। विज्ञान चाहे कितनी ही उन्नति क्यों ना प्राप्त कर ले, पर अंतर की सच्ची शांति, जीवन का सच्चा सुख तो केवल ऐसे संत ही दे सकते हैं... यह वैज्ञानिकों को भी मानना पड़ता है।

दिल्ली का मंदिर पिछले कई सालों से अधूरा ही दिखाई पड़ता है। कोई चमक-दमक, वैभव वगैरह भी दिखाई नहीं पड़ता। पर, **प.पू. गुरुजी की साधुता, सादगी, ट्रान्स्पेरन्सी एवं स्ट्रेईटफॉरवर्डनेस हर एक को भीतर तक स्पर्श कर जाती है।** एक अपनेपन का संबंध हो जाता है। वास्तव में ऐसे भगवान रखे संत ही मंदिर का असली प्राण होते हैं। और... यह बात कोई 12-13 साल का बच्चा करे, तो सहज ही ख्याल आ जाता है कि प्रभु ही उसमें प्रवेश करके बोल गए। **प.भ. विकास मल्कानीजी** का बड़ा बेटा **विनय** शुरु से ही प.पू. गुरुजी के साथ खूब जुड़ा हुआ है। पिछले महीने– 14 फरवरी को **'वेलेन्टाईन डे'** था। जगत में ऐसे अवसर पर एक मित्र अपने प्रिय मित्र को कोई उपहार या कार्ड वगैरह देता है। पर, इस बच्चे की चित्तपट्टी पर प.पू. गुरुजी व प.पू. दीदी कितने छाए होंगे कि उसने प.पू. गुरुजी को दिल के आकार का और प.पू. दीदी को चौकोर छोटा तकिया गिफ्ट के तौर पर दिया। उसकी मम्मी ने उसे पूछा कि दिल के आकार की चीज़ तो लड़कियों को देते हैं और वह तुमने प.पू. गुरुजी को क्यों दिया ? तब उसने सहज ही जवाब दिया कि–

'मैंने सही ही दिया है। गुरुजी इज़ धी हार्ट ऑफ धी टेम्पल। नथींग विल वर्क विधआऊट हार्ट, सो नथींग विल वर्क विधआऊट गुरुजी !'

चेतना को स्पर्श करके उसके भीतर बैठ जाना–वह केपेसिटी गुणातीत साधु की मैक्सीमम है। तभी तो कोई पुराना हरिभक्त हो, बच्चा हो, वृद्ध हो या नया ही संबंध में आया हो- मंदिर आते ही–प.पू. गुरुजी के प्रथम दर्शन से ही उसे एक अपनेपन का एहसास हो जाता है।

श्री महेन्द्र कपूरजी के परिचय से प्रसिद्ध गायिका **सौ. वंदना दीदी बाजपाई** तो तीन-चार महीने से ही संबंध में आए हैं। उन्होंने यहां का जो सारा पारिवारिक माहौल देखा, तो पहले ही दिन उन्हें एकदम आश्चर्य हुआ कि क्या ऐसी जगह भी है ! उन्होंने सहज ही महेन्द्र कपूरजी को फोन पर बताया कि वो यहां आईं हैं और उनसे बात करते हुए कहा–

'मैं तो इस विचार में हूँ कि दिल्ली में इतनी अच्छी जगह भी है ? सच में आपने तो मुझे स्वर्ग जैसी जगह पर भेज दिया ! यहां का पत्ता-पत्ता जीवंत है।'

उनके ये शब्द भीतर के थे और... एक इन्टीमेसी से- परिवार की भावना से वे मंदिर के साथ जुड़ गए हैं... उनके युवान सुपुत्र **प.भ. प्रतीक** तो यहां तक बोल उठा कि–

'मम्मी ! सच, यहां आने के बाद और कहीं भटकना रहता नहीं।'

प.पू. गुरुजी व उनकी आज्ञा से **प.पू. दीदी** भी चाहे मंदिर के कोई व्यवहारिक काम से किसी से मिलने जाती हैं, तो **उनका एटीटयुड् रंचमात्र भी कॉमर्शीयल ना होकर** सिर्फ यही रहता है कि उसे प्रभु का संबंध हो जाए। और.... यही वजह है कि उसे संतों के साथ सहज एक लव इन्टीमेसी हो जाती है। इससे भी अधिक यहां का माहौल देख कर-सब का आपस में जो प्यार है वो देख कर वह भी इस गुणातीत कुनबे का अंश बन जाता है।

ऐसे ही मुंबई से प.पू. स्वामिजी के संबंध से **प.भ. कौशिकभाई ओझा** दिल्ली मंदिर पहली बार आए और प.पू. गुरुजी से मिले। वे बोले कि–

मुझे यहां प.पू. गुरुजी से खूब पोझीटीव एनर्जी मिली है और इससे भी अधिक-मैं कहीं भी जाता हूँ तो हमेशा मुझे ऐसा होता रहता है कि कब जल्दी घर वापिस पहुँच जाऊं ? पर आज यहां दिल्ली से वापिस जाते हुए पहली बार ऐसा हो रहा है कि मुझे इस घर से जाना है क्या ?

बहुत सस्ते में जो चीज मिली हो, उसकी महिमा नहीं रहती। सो, थोड़े-थोड़े दिनों में **प.पू. काकाजी किसी ना किसी में से प्रवेश होकर बोलते रहते हैं कि ये साधु, ये स्थान, ये सत्संग कुछ अलग मिला है तुम्हें– वो समझो !**

आज प.पू. गुरुजी हमारे लिए इतने सस्ते बने हैं, इतने गरजु बने हैं–जो कि हमारे ही लेवल पर आकर जीते हैं और ऐसा एहसास भी नहीं होने देते कि तुम्हारे लिए मैं कितना कर रहा हूँ... सोचें तो दिमाग एकदम शून्य को पा जाता है।

31 दिसंबर को ठाकुरजी के हॉल में दिल्ली का गुणातीत कुनबा एकत्रित हुआ था। रात की सभा थी। प्रोग्राम साढ़े बारह-एक बजे तक चला। उसके बाद प.पू. गुरुजी नीचे गए। वहां न्यू इयर निमित्त कई भक्तों के जो फोन

आए हुए थे, सेवक ने उसकी लिस्ट बना रखी थी। प.पू. गुरुजी ने वो लिस्ट सारा देखा। फिर टाईम देखा कि अभी तो एक बज गया है। दूसरे दिन सुबह कितने सारे भक्तों से पता चला–जिनके रात को फोन आए थे, उन्हें सुबह साढ़े पाँच बजे तो प.पू. गुरुजी ने सामने से फोन कर लिया ! जिन्हें आशीर्वाद लेने थे, वो तो फर्स्ट जनवरी को दोबारा अपने आप फोन करके ले लेते। लेकिन सामने से ही गरजु बन कर सुबह साढ़े पाँच बजे प.पू. गुरुजी ने इन सबको फोन किए ! **हमें उन्हें राजी करने के लिए उद्यम करना चाहिए-गरज रखनी चाहिए, उसकी बजाय वो ऐसी गरज रखते हैं !**

प.पू. गुरुजी को सफाई और वस्तुओं को ठीकठाक रखना खूब पसंद है। इस सामान्य विवेक को सिखाने के लिए वे अद्भुत जेस्चर करते हैं और साथ ही मुक्तों को स्मृति भी देते हैं... रिलायन्स के फोन नए-नए निकले थे। प.पू. गुरुजी के लिए भी रिलायन्स फोन आया। सेवक मार्किट से उसका कवर ले आया कि उस पर कोई खरोंच-निशान इत्यादि ना पड़ जाएं। तो, उसके बाद प.पू. गुरुजी ने सेवक से कम से कम पचास कवर मँगा लिए और जब भी कोई रिलायन्स का मोबाईल लेकर प.पू. गुरुजी के पास पूजन कराने आए, तो वे पूजन करके सेवक से उस पर कवर चढ़वा कर उसको देते। यह बात बहुत छोटी-सी है, लेकिन इससे पता चलता है कि हर चीज़ के लिए **प.पू. गुरुजी कितने केरींग हैं व इनकी भावना देखें कि मुक्तों को राजी करने का एक भी मौका वे छोड़ते नहीं हैं।** हर एक ने यह नोट किया होगा कि हमारे साथ वे ऐसा ओतप्रोत हो जाते हैं कि हम खुश हो जाएं !

प.पू. गुरुजी का जीवन ही मानो– बात न भी करें तब भी आत्मीयता का परामर्श देता है और इनकी हर क्रिया जीवलक्षी-चैतन्यलक्षी रही है...

पिछले साल कई मुक्तों के साथ प.पू. गुरुजी पंजाब गए थे और 'शताब्दी' से वापिस आने वाले थे। बुकिंग दिल्ली से ही करी हुई थी, लेकिन कुछ गड़बड़ ऐसी हुई कि वापसी की एक टिकट केन्सल करानी थी, उसके बजाय सारी टिकटें केन्सल हो गईं थीं।

लुधियाना में प.भ. प्यारेलालजी के यहां प.पू. गुरुजी ठाकुरजी का थाल धराने वाले थे और आराम भी वहीं करके शाम की 'शताब्दी' से दिल्ली वापिस आने वाले थे। ठाकुरजी के थाल में पुदीने की चटनी थी। प.पू. गुरुजी ने ज़रा-सी टेस्ट करी और फिर तीन-चार बार कहा कि चटनी किसी को मत देना, टेबल पर भी नहीं रखना। एक मुक्त की थाली परोस दी गई थी, तो उसके लिए भी कहलवाया कि यदि इसमें चटनी रख दी हो तो निकाल लो। ये सारी चटनी तो मैं दिल्ली ले जाऊंगा, किसी को भी नहीं देना। प.पू. गुरुजी की ऐसी बातों को हम यूं समझते हैं कि मज़ाक कर रहे हैं-लाड़ लड़ा रहे हैं। पूरा पतीला पौंछ कर वो चटनी बोतल में पैक करवा दी... किसी को भी खाने नहीं दी और कहते रहे कि बहुत टेस्टी बनी है, मुझे दिल्ली ले जानी है।

दोपहर को प.पू. गुरुजी आराम में चले गए और तब प.भ. राकेशभाई के पास मेसेज आया कि गलती से सब टिकटें केन्सल हो गईं हैं।

दूसरी ओर **प.भ. प्यारेलालजी** की बड़ी बेटी **सौ. शिवाली**-जो वहीं उनके पास रहती है, उसने साढ़े तीन बजे के करीब चाय चढ़ा दी थी। प.पू. गुरुजी वहां होते हैं तो 30-35 हरिभक्त तो दर्शन के लिए हो ही जाते हैं। प.पू. गुरुजी आराम में से उठेंगे और मिलने-करने जो आए होंगे उन्हें चाय देंगे करके उसने चाय तैयार कर दी। पर, सारी टिकटें केन्सल हो गई थीं, सो प.पू. गुरुजी व साथ के सब मुक्त चाय छोड़ कर जल्दी स्टेशन के लिए रवाना हो गए कि 'शाने पंजाब' या कोई और ट्रेन मिल जाए । स्टेशन पर 'जम्मू तवी' खड़ी थी और चलने की तैयारी में थी; उसी में सब बैठ गए।

वहां शिवाली के मन में चलता रहा कि अजीब हैं गुरुजी ! इतनी चाय बनी हुई थी और सारी छोड़ कर चले गए ! तीस-चालीस कप चाय वेस्ट होती देख कर मन में यूं होना स्वभाविक ही है। वो जब रात को सो गई, तो सपने में प.पू. गुरुजी के दर्शन हुए। उसने सपने में भी प.पू. गुरुजी के पास एक प्रेम के हकदावे से बड़बड़ाना शुरु करा कि मैंने तो इतनी सारी चाय बनाई थी और आप जल्दबाजी में छोड़ कर चले गए। प.पू. गुरुजी ने उसे स्वप्न में जवाब दिया कि– ***पगली ! तू इतना भी नहीं समझी ? मैं तो तुम्हारे यहां से चटनी के रूप में खटास ले गया और मिठास छोड़ गया !*** और वाकई–बेबी को कुछ प्रॉब्लम था, जो सोल्व होने लगा ! गुरुजी हम सभी के घर आते हैं-आनंद कराते हैं, परंतु वे हमें बहुत कुछ दे जाने या फिर हमारा बहुत कुछ टालने के लिए आते हैं।

ऐसी ही एक दूसरी बात कि– कई बार शॉपिंग के लिए कोई मार्किट जा रहा हो, तो उसे पूछेंगे कि– मेरे लिए क्या लाओगे ? मार्किट में फिर उस मुक्त का और किसी तरफ ध्यान ही नहीं जाता। दिमाग में सतत् एक ही अनुसंधान चलता रहता है कि प.पू. गुरुजी के लिए क्या ले जाएंगे ? यूं कैसी-कैसी **अनोखी कला द्वारा वे हमें जगत के आकर्षणों– प्रलोभन व पंचविषय के रमणीय रागों से पर ले जाते हैं !**

सच, **हम साधु की क्रियाओं को बाह्यदृष्टि से ही देखते हैं। इसलिए जो बात गहराई की पकड़नी है, वो हम पकड़ नहीं पाते।** हाँ, मज़ाक के तौर पर या सखाभाव से हम उनके साथ बोलें-करें वो बात अलग है, पर हम यदि उनकी क्रियाएं मायिक चक्षुओं से देखते रहेंगे तो संबंध व्यर्थ ही है। उनको निहारने के लिए भीतर की-अंतर की दृष्टि चाहिए। हम उन्हें जैसा देखते हैं, वे वैसे नहीं हैं; बल्कि हमारी छोटी सोच के दायरे से अनंत गुणा ऊँचे व कल्याणकारी हैं।

प.पू. गुरुजी यानि अप्रतिम श्रद्धा व प्रभु के प्रति मन-बुद्धि के अजोड़ समर्पण का दिव्य संगम... **इनका समग्र क्रियाकलाप ही मानो प.पू. काकाजी के प्रति की अनुपम भक्ति का निरंतर प्रज्ज्वलित गुरुभक्ति यज्ञ ! प.पू. काकाजी को अमर व जीवंत रखने की एक-एक श्वास मात्र में चाहना...** गुणातीतभाव में रह कर आज वे प.पू. काकाजी की गरिमा बढ़ा रहे हैं... प.पू. काकाजी द्वारा दिए भावात्मक एकता और सर्वदेशियता के मंत्रों को अपने वर्तन से प्रसारित कर रहे हैं। प.पू. काकाजी को प्रगट-प्रत्यक्ष रख कर काकाजी का विजय ध्वज लहरा कर जय जयकार करने की उनकी एक मात्र तमन्ना दिखाई पड़ती है।

सन् 2002 में मनाए गए परम पूज्य काकाजी के साक्षात्कार की स्वर्णजयंती की स्मृति आने वाली पीढ़ी को हमेशा रहे, सो 'ताड़देव' में प.पू. गुरुजी ने **'स्वर्णजयंती द्वार'** बनवाया। तत्पश्चात् इतिहास के पन्ने पर भी प.पू. काकाजी को जीवंत रखने सन् 2003 में माननीय श्री काशीरामभाई राणा साहेब के सहयोग से भारत सरकार द्वारा **'डाक टिकट'** निकलवा कर प.पू. काकाजी को सम्मानित करवाया। साथ ही–इस शुभ अवसर पर दिल्ली, हरियाणा और उत्तर भारत में अब जो सत्संग व्यापक होता दिखाई दे रहा है, इसकी शुरुआत और विकास के लिए प.पू. काकाजी ने अत्यंत कठिन माहौल में जो अनथक् परिश्रम किया, वह 'ताड़देव' में एक **'शिलालेख'** पर अंकित करवाया; ताकि उस श्रेय को लूटने, भारत में 'ब्रिटिश रूल' का इतिहास झूठा पेश करके पढ़ाने वाले अंग्रेजों की भाँति, यहां के सत्संग के इस इतिहास को पलटाने की भावि में कोई चेष्टा न करे। सच, प.पू. गुरुजी की गुरुभक्ति देख कर तो दिल और दिमाग दोनों नतमस्तक हो जाते हैं कि आज इस उम्र में ज़रा भी थकान महसूस किए बिना प.पू. गुरुजी की कैसी उमंग-उत्साह ?

प.पू. गुरुजी को नज़दीक से निहारें कि वर्षों से जीवन की हर एक क्षण प.पू. काकाजी के समक्ष ही नज़र रख कर गुरुभक्ति अदा करके पराभक्ति कर रहे हैं। प.पू. काकाजी की मर्जी देख कर उत्तर भारत में श्री अक्षरपुरुषोत्तम महाराज की सनातन युगल उपासना के प्रवर्तन के लिए वे जुट गए। **दिल्ली व उत्तर भारत के मुक्तों के कल्याण के लिए प.पू. गुरुजी को चुना, वह प.पू. काकाजी का ऋण हम कभी भी भूल नहीं पाएंगे...**

सो, प्रसंग भले छोटे-छोटे एवं सामान्य हैं, लेकिन साधु को देखने का नज़रिया हम जरुर बदलें... 'स्वामी की बातों' में लिखा है कि दूसरे तो अभागे, लेकिन यादव तो निरंतर अभागे कि कृष्ण के साथ में रहते हुए - इनकी बिरादरी के होते हुए भी वे उन्हें पहचान नहीं सके। **यह भूल हम से न हो कि हम ऐसे दिव्य पुरुष को अपने नज़रिये से, अपने बौद्धिक मूल्यांकनों से नापते रहें।**

आज प.पू. गुरुजी का स्पष्ट अभिप्राय है कि हम सब आपस में एकता से-कुटुंबभाव से रहें। उन्हें और कुछ नहीं चाहिए। हम आपस में हँसते-खेलते आनंद करते दिखाई देते हैं, तो उनको सुकून मिलता है। यह उनकी आँखों से भी झलकता है....

❖ आपस में हमारा मनमुटाव होता होगा,

❖ आपस में हम कहीं अड़ जाते होंगे,

❖ कुछ स्वभाव के बस होकर आपस में रूठ जाते होंगे–

वो देख कर उनको कितना दुःख होता होगा ?

हमारी ओर से उन्हें यह दुःख न पहुँचे यही हमारी सबसे बड़ी सेवा है।

महाराज के समय का एक प्रसंग है कि राजकोट के स्वामिनारायण मंदिर में एक बेरी के पेड़ के नीचे श्रीजी महाराज बैठे थे। श्रीजी महाराज जब वहां से उठने लगे तो उस बेर के पेड़ के काँटे श्रीजी महाराज की पाघ में फंसे। यह देख कर सद्. गोपाळानंदस्वामी को विचार आया कि–

अरे ! बेरी, तेरे नीचे साक्षात् नारायण बैठे, फिर भी तूने तेरे स्वभाव नहीं छोड़े ?

सद्. गोपाळानंदस्वामी के इतना सोचते ही उसके सभी काँटे झड़ कर तुरंत गिर गए। यह काल्पनिक बात नहीं है। **आज भी राजकोट में वह बिना काँटों वाला बेर का पेड़ दर्शन के लिए मौजूद है।**

इस प्रसंग से हम सोचें कि एक बेर के पेड़ के काँटों से चुभने की प्रकृति श्रीजी महाराज के संतों को पसंद नहीं, तो स्वभाव में– हठ, मान, ईर्ष्या के प्रवाह में बह कर मुक्तों से बराबरी वगैरह करना, संबंध वालों के साथ अनबन से रहना या हमारी वृत्तियों को निरंतर पोसते रहने से श्रीजी महाराज व उन्हें अखंड धारे हुए गुणातीत स्वरूपों को कितनी ठेस पहुँचती होगी ?

पूर्व के पुण्य उदय हुए, जो जीवन में प्रत्यक्ष प्रभु व संत दोनों का ही जोग केवल कृपा से मिल गया। अर्थात् दोनों पाँव अक्षरधाम में ! बिना कोई साधन किए हमें श्रीजी के अखंड धारक प्रभुस्वरूप प.पू. काकाजी मिले और उनकी पहचान कराने वाले संतस्वरूप में मिले–हमारे प्यारे-प्यारे प.पू. गुरुजी !

तो, प.पू. गुरुजी के चरणों में उनकी जन्म जयंती निमित्त यही प्रार्थना है कि–

अब तक भले आपके मुताबिक न जीए हों, लेकिन अब आप ऐसी कृपा करो और हम भी ऐसा भजन करें, जिससे कि आपको हमारे लिए परिश्रम न लेना पड़े और हमें देख कर हर एक को ऐसा हो कि इन्हें मिले काकाजी व गुरुजी कैसे होंगे ?

✡✡✡

अवतारों के अवतारी श्रीजी महाराज का प्रागट्य....

अहो 30 मार्च–रामनवमी... अवतारों के अवतारी श्री सहजानंदजी महाराज का अवतरण दिन !

सच, भगवान स्वामिनारायण का धरती पर मानवरूप में अवतरण शाश्वत् रूप से महामंगलकारी बना। आत्मा व परमात्मा, ब्रह्म व परब्रह्म की युगल उपासना तब से ही धरती पर आई। श्रीजी महाराज साक्षात् परब्रह्म पुरुषोत्तमनारायण थे और साथ ही खुद के रहने के धाम अक्षरब्रह्म को भी पृथ्वी पर लाए। जीव, ईश्वर, माया, ब्रह्म और परब्रह्म के अनादि के पाँच भेद को यथार्थ रूप से कोई जानता तक नहीं था। तब तक धर्म के कर्मकांड और शास्त्रों से दृढ़ हुई रुढ़िगत मान्यताएं एवं साधना का राग छुड़वाना अत्यंत कठिन कार्य था। पर,

❋ *श्रीजी महाराज ने काठी दरबारों के रहन-सहन को अपना कर – उनके लेवल पर आकर अपने वर्तन से, उपदेश से रहस्य खुला करा।*

❋ *अनेक जीवों पर कृपा करके समाधि में दिव्य दर्शन करा कर अपनी दिव्य शक्ति-अवतारों के अवतारी की निष्ठा बिठाई।*

❋ *अपने संबंध मात्र से सेवकों को निश्चिंत व निर्भय बनाया।*

❋ *ना टलने वाले प्रारब्ध व प्रकृति टालने की सहज-सरल रीतें बताईं।*

❋ *लूटेरों के हाथ में माला पकड़वाई।*

❋ *वेश्याओं को सती जैसी पवित्रता बख़्श कर मोक्ष की अधिकारिणी बनाई।*

❋ *भक्तों के इस लोक व परलोक की जिम्मेदारी ली।*

❋ *पर्वतभाई, गोरधनभाई, पूजा डोडिया व देवजी भक्त जैसे अनेक एकांतिकों द्वारा 'निष्काम धर्म' अखंड रखा।*

❋ *गुणातीत परंपरा की ज्योत को जलती रखी और आश्रितों को अखंड सौभाग्यवंता बनाया – समर्थ बनाया।*

भगवान स्वामिनारायण ने ऐसा '**संबंधयोग**' दिया कि जाने-अनजाने जो भी संबंध में एक बार आए, वो कल्याण का अधिकारी बन जाए !

इससे भी अधिक सामान्य से सामान्य व्यक्ति भी समझ सके, इतनी सादी सरल भाषा में श्रीजी महाराज ने कौल दिया कि–

'तुम सिर्फ मेरा आसरा दृढ़ रखना। मुझे सदा दिव्य साकार व कर्ता-हर्ता मान कर मेरा भजन करना। मैं हरे तिनके में प्रवेश करके भी तुम्हारी रक्षा करूंगा।'

लेकिन, इसके साथ श्रीजी महाराज ने एक शर्त रखी कि–

'मेरा संबंध वाला चाहे कैसा भी हो, कितना ही दोषों युक्त क्यों ना हो, पर तब भी उसके दोष नहीं देखना। किसी के अभाव-अवगुण, खटपट, खींचातानी में तुम नहीं पड़ना। यह मरणदोरी है। संबंध वाले मुक्त ब्रह्माग्नि हैं। यदि मेरे संतों और मेरे भक्तों का किसी भी प्रकार से द्रोह करोगे तो कल्याण की बात तो दूर रही, पर काल, कर्म, माया से भी मैं तुम्हारी रक्षा नहीं कर पाऊंगा। दूसरी ओर यदि तुम धाम-धामी मुक्तों को निर्दोष मान कर सेवा करोगे, तो मैं तुम्हें हर प्रकार से निहाल-निहाल कर दूँगा... मेरी लीलाओं

की स्मृति करते रहोगे तो अंतकाल में मैं स्वयं तुम्हें लेने आऊँगा।'

हम सोचें कि– श्रीजी महाराज ने अपने अंतर का गूढ़तम रहस्य कितने सरल शब्दों में बता दिया... ऐसे भव्य आशीर्वाद बरसा कर मानो हम पर पूरा अमृतकुंभ ही छलका दिया ! और... मात्र ४९ वर्ष की आयु में श्रीजी महाराज ने भव्य मंदिरों का निर्माण करके, शास्त्रों की रचना करके, संतप्रणाली रखी– अर्थात्, कीर्ति, कंचन और कामिनी के रस-रागों से विरक्त ऐसे पवित्र गुणातीत संत द्वारा पृथ्वी पर अखंड रहूँगा, ऐसा अभयदान दे दिया...

तो उनको अखंड धारे हुए और हमें सनाथ करने वाले प्रत्यक्ष गुणातीत स्वरूपों को तनिक भी मोहताज किए बिना उनकी अनुवृत्ति में जीकर संप, सुहृद्‌भाव व एकता के सिद्धांत से '**श्रीहरि जयंती**' मना कर स्वयं को कृतार्थ करें।

✡✡✡

आई-आई प.पू. स्वामिजी की जयंती–4 मई....

अक्षरपुरुषोत्तम की सनातन युगल उपासना के प्रवर्तक गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज व गुरुहरि योगीजी महाराज का यत्किंचित ऋण चुकाने ही जिनके जीवन की पल-पल व्यतीत हो रही है, ऐसे प.पू. स्वामिजी की जयंती पर सर्वप्रथम उनकी गुरुभक्ति-प्रभुभक्ति को कोटि-कोटि वंदन...

प.पू. स्वामिजी के समग्र अस्तित्व व व्यक्तित्व में से केवल असली संत की साधुता छलकती दिखाई पड़ती है। गुरुहरि योगीजी महाराज की सारधार अनुवृत्ति, अभिप्राय, प्रणाली रख कर प.पू. स्वामिजी बहुत ही विशाल दृष्टि व उदारता से एक समर्थ चैतन्यशिल्पी का अविरत कार्य कर रहे हैं... चैतन्यों को हीरे की भांति तराश रहे हैं। उनके संबंध में आए चैतन्यों को सर्व प्रकार के–लौकिक, अलौकिक और आध्यात्मिक समाधान देते रहते हैं और... प्रथम दर्शन पर ही प.पू. स्वामिजी की एक करुणामयी दृष्टि मिलते हरेक को लगता है कि– 'स्वामिजी मेरे हैं।'

उनके संबंध में कोई भी आए, उसके जीवन को केवल प्रभुमय बनाने का ध्येय रख कर वे अलग-अलग कक्षा के, अलग-अलग अंग वाले और अलग-अलग समझ रखने वाले मुमुक्षुओं के हृदय में फट् बैठ जाते हैं... उन सबको भगवान सम्मुख करते रहते हैं। परिणामस्वरूप युवकों, बहनों, गृहस्थों और संतों का विशाल समुदाय– एक रुचि से, एक दिल से, एक-दूसरे का सेवक बन कर– पूरक बन कर, एक-दूसरे में ओतप्रोत–प्रभु के बल से, प्रभु का ही कार्य करता एक रुचि वाला गुरुमुखी व निर्मल समाज–आत्मीय समाज विकसित हुआ है। **यही प.पू. स्वामिजी की प्रभुधारक विभूति होने का साक्षात् परिचय है।**

सच, ऐसे प्रभुधारक संत का जीवन– वही मूर्तिमान ज्ञान होता है। उनके लीलाचरित्र दिव्य मान कर गाना उससे बड़ा कोई ज्ञान नहीं है। साथ ही एक साधक की अदा से **भजन-प्रार्थना** का बल लेना भी जरुरी है, ताकि हमारा साधना मार्ग निर्विघ्न बना रहे। इस बात के कई मार्मिक मुद्दे प.पू. स्वामिजी ने अपनी कथावार्ता दौरान बताए हैं। जैसे कि–

❖ प्रसंग पर **भजन-प्रार्थना** का बल नहीं लेंगे, तो हमारी प्रगति कभी भी नहीं हो पाएगी। सब कुछ जानने-समझने के बावजूद **भजन** का बल नहीं लेंगे, तो हम लाखों-करोड़ों वर्ष तक सत्पुरुष के साथ रहते हुए भी एक कदम भी आगे नहीं बढ़ पाएंगे। प्रसंग पर खुद का दोष देख कर **भजन-प्रार्थना** में लग पड़े, उसे ही साथ रहे कहा जाए ! ऐसा सेवक भले ही और कुछ ना समझता हो, फिर भी वह एकांतिकी स्थिति को पा जाएगा।

❖ प्रसंग पर खुद का दोष देख कर दिल की सच्चाई से रो-रो कर सच्चे भाव से तीव्र **भजन** नहीं करते यही साधकों के लिए बड़ी कसर है।

❖ हम में भले ही कोई बरकत नहीं हो, तो चलेगा। कोई गुण होने की भी जरुरत नहीं है। लेकिन भीतर में एक दृढ़ ठहराव करना–'सद्‌विचारों को ग्रहण करना है, बुरे विचारों का त्याग करना है' और नियमित **भजन** की आदत डालनी। हम से जो आगे हो या तो जो नियमित **भजन** करता हो उसका अंतर से गुण लेकर **भजन** करने की आदत डालनी। दिल की सच्चाई से हम छः महीने यह नियमित करें। इसमें

छल, कपट, लापरवाही ना बरतें, तो छः ही महीने में परिणाम मिलेगा ! निर्वासनिक हो जाएंगे, अंतःकरण हमें गुमराह करने असमर्थ बन जाएगा।

❖ मानो किसी प्रसंग पर हम फेल हो गए, पर तब खुद का ही दोष देख कर यदि **भजन** करेंगे तो प्रभु खूब बल दे देते हैं या तो बुद्धियोग दे देते हैं, जिससे कि– जो नालायक मन हमें परेशान करता रहता है, उसी मन को नचाते हम हो जाएं। परंतु इसके लिए सच्ची रुचि रखनी पड़े।

❖ प्रभु का अनंत बल, बुद्धि, शक्ति, सामर्थ्य हमारे दिल में प्रगटाने के लिए हमें **भजन** करना है। इन्द्रियों-अंतःकरण का प्रवाह प्रभुसम्मुख रखने के लिए **भजन** अनिवार्य है। हमारा समग्र तंत्र यहां लय करना पड़े।

❖ **भजन** करने से ही अहंता और ममता पिघलेगी, जड़ता के ढेर पिघलेंगे, दासत्व प्रगटेगा। **भजन** के प्रताप से गिरनार के कालमिंढ पत्थर जैसी जड़ता में से कोमल मक्खन जैसा दिल बनता है।

❖ **भजन** करने से ही भगवान प्रसन्न होंगे और उसके बाद सुख की शुरुआत होगी।

❖ **भजन** से ही दासत्व का आनंद लूट सकेंगे। **भजन** से जाग्रत बन पाएंगे। **भजन** से ही हम हमारे ध्येय की– मंजिल की ओर तीव्र गति से आगे बढ़ पाएंगे।

❖ **भजन और प्रार्थना** एक मंथन है। इससे सारा कूड़ा बाहर निकल आएगा, दिल निर्मल बनेगा और फिर प्रभु को उसमें बैठने का मन होगा।

❖ **भजन** करते-करते क्रियायोगों को करने की आदत डालेंगे, तो इन्द्रियाँ-अंतःकरण की हमारी गुलामी मिट जाएगी। इनके शिकंजे से मुक्त करके महाराज हमें स्वतंत्र बनाएंगे।

❖ **भजन** करने पर महाराज हम में शुभ विचार प्रगटाते हैं। **भजन** से आत्मीयता भी प्रगटा देंगे।

'**स्वामिनारायण**' महामंत्र मुमुक्षुओं के लिए प्राण समान है, सूर्योदय है, भाग्योदय है, सर्वस्व है, नायगरा के धोध समान है... सो, सर्वशक्ति, तेज, गुण, ऐश्वर्य, सुख-शांति और आनंद हमारे दिल में प्रगटाने के लिए **भजन और प्रार्थना** ही अनिवार्य है। हमें हमारे सनातन माँ-बाप यानि–'स्वामी-नारायण' की ऐसी मस्ती होनी चाहिए जिससे काल, कर्म या माया का भय हमें परेशान ना कर पाए। ऐसा मान कर **भजन** करते रहेंगे, तो हमारे दिल में ठंडक होगी ही। प्रसंग पर **भजन** का ही बल लेंगे तो प्रभु उपायभूत हो जाएंगे। अशक्य लगता काम भी सहजता से हो जाएगा। प्रसंग पर यदि **भजन** करेंगे तो भगवान हाज़िर हो जाएंगे।

प.पू. स्वामिजी ने कृपा करके '**सभी रोगों की एक अक्सीर जड़ी-बूटी**' रूप हमें यह सहज उपाय बताया है। तो उनकी जयंती पर यही प्रार्थना है कि– **भजन** के साथ मुक्तों की सेवा हमारी 'वासना' बन जाए और मुक्तों के पास '**हार**' कर आपको '**जीत**' लें !

✡✡✡

Statement about ownership and other particulars about newspaper

'भगवत् कृपा'

(Form IV Rule 8)

1. Place of Publication	:	Yogi Divine Society 'Taad-dev', Kakaji Lane, Swaminarayan Marg, Ashok Vihar-III, Delhi-110 052
2. Periodicity of its Publication	:	Bi-Monthly
3. Printer's Name	:	Prabhaker Rao
4. Nationality	:	Indian
Address	:	'Taad-dev', Kakaji Lane, Swaminarayan Marg, Ashok Vihar-III, Delhi -52
5. Publisher's Name	:	
Nationality	:	As above
Address	:	
6. Editor's Name	:	
Nationality	:	As above
Address	:	
7. Owner's Name	:	Yogi Divine Society
Nationality	:	Indian
Address	:	'Taad-dev', Kakaji Lane Swaminarayan Marg, Ashok Vihar-III, Delhi-52

I, Prabhaker Rao, hereby declare that the particulars given above are true to the best of my knowledge and belief.

Sd/-

PRABHAKER RAO

Date: 15 March, 2004 Signature of Publisher

भजन

(राग- घर आया मेरा परदेसी....)

आ.... आ.... आ.....
संत मिला है परदेसी, मुक्तों की मंगल मूर्ति
आ.... आ.... आ.....

श्वासोश्वास में काकाजी,
एक ही निशान, तू हो राजी
ले उनका आधार तूने, जीती है हर एक बाजी
आ.... आ.... आ.....

निरपेक्ष निर्लेप निर्गुण है,
भावातीत गुणातीत है
आतम का प्रीतम प्यारा, क्रिया तेरी चैतन्यलक्षी
आ.... आ.... आ.....

संग नही प्रसंग करें,
भगवदी से दृढ़ मैत्री करें,
मनमुखी ये तंत्र मेरा, कर दो हे प्रभु गुरुमुखी
आ.... आ.... आ.....

एक तू ही हम शून्य ही हैं,
कोरा काग़ज़ बन के रहें,
अविरत महिमाधारा बहे, बन के जीएं तेरी बंसी
आ.... आ.... आ.....
संत मिला है परदेसी.....
आ.... आ.... आ.....
संत मिला है परदेसी.....

व्रतोत्सवसूची

(1) दि. 17.3.2004, बुधवार – एकादशी, व्रत
(2) दि. 28.3.2004, रविवार – **प.पू. गुरुजी की जन्म जयंती मनाएंगे (सायं 6:00 से 9:00 'ताड़देव' में)**
(3) दि. 30.3.2004, मंगलवार – रामनौमी, **भगवान श्री स्वामिनारायण जयंती**, व्रत
(4) दि. 1.4.2004, गुरुवार – एकादशी, व्रत
(5) दि. 15.4.2004, गुरुवार – एकादशी, व्रत
(6) दि. 22.4.2004, गुरुवार – अखात्रीज
(7) दि. 1.5.2004, शनिवार – एकादशी, व्रत
(8) दि. 4.5.2004, मंगलवार – **प्र. ब्र. स्व. प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी की जन्म जयंती**
(9) दि. 14.5.2004, शुक्रवार – एकादशी, व्रत
(10) दि. 15.5.2004, शनिवार – **गुरुहरि प.पू. योगीजी महाराज का प्रागट्य दिन**

R.N.I. 28971/ 77
Air Mail
'Bhagwatkripa' Bimonthly Magazine
Despatched on 15th of alternate months
If undelivered please return to :—
Printer, Publisher, Editor :—
SHRI PRABHAKER RAO *FOR* YOGI DIVINE SOCIETY- DELHI
'Taad-dev', Kakaji Lane, Swaminarayan Marg,
Ashok Vihar-III, Delhi-110 052 (India)
Tel.: 2722 9327, 2724 9327
Printed at : **Delux Offset Printers**
308/4, Shahzadabagh, Opp. Rohtak Road,
Daya Basti, Delhi

To